रीतिबद्ध काव्य

रीतिकालीन कविता के प्रसंग में विद्वानों ने तीन प्रकार के काव्य का विवरण दिया है—एक रीतिबद्ध, दूसरा रीतिसिद्ध और तीसरा रीतिमुक्त। 'रीतिमुक्त' के सम्बन्ध में कोई मतभेद नहीं है, परन्तु 'रीतिबद्ध' शब्द के विषय में मतभेद प्राप्त होता है। आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र के अनुसार 'रीतिबद्ध' रचना लक्षणों और उदाहरणों से युक्त होती है, परन्तु डॉ. नगेन्द्र इस प्रकार की रचनाओं को रीतिबद्ध कहने के पक्ष में नहीं हैं। ऐसे कवियों को वे रीतिकार या आचार्य कवि मानते हैं। रीतिकार आचार्य कवि उनके मत से वे कवि हैं, जिन्होंने काव्यशास्त्र की शिक्षा देने के लिए रीतिग्रन्थों का प्रणयन किया। उनका प्रमुख उद्देश्य या तो काव्य की शिक्षा देना है या किसी काव्यशास्त्रीय विषय का सोदाहरण प्रतिपादन करना। उनकी दृष्टि में रीतिबद्ध कवि वे हैं, जिन्होंने रीतिग्रन्थों की रचना न करके काव्य-सिद्धान्तों या लक्षणों के अनुसार काव्य-रचना की है। अलंकार, रस, नायिकाभेद, ध्वनि आदि उनके ध्यान में तो रहे हैं, परन्तु उनका प्रत्यक्षत: निरूपण इन कवियों ने नहीं किया; वरन् उनके अनुसार उत्कृष्ट काव्य का सृजन किया है। ऐसी दशा में मूलत: वे कवि हैं, आचार्य नहीं। इसलिए उन्हें रीतिबद्ध कवि मानना चाहिए। आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र ऐसे कवियों को 'रीतिसिद्ध कवि' कहते हैं। अत: इस प्रसंग में यहां आचार्य विश्वनाथप्रसाद जी के अनुसार जो रीतिसिद्ध कवि हैं, तथा डॉ. नगेन्द्र के अनुसार जो रीतिबद्ध कवि हैं, उन्हीं का विवेचनात्मक परिचय रीतिबद्ध कवियों के अन्तर्गत दिया जा रहा है।

'हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास, 'षष्ठ भाग' में रीतिबद्ध कवियों के प्रसंग में निम्नलिखित कवियों को सम्मिलित किया गया है—१. बिहारी, २. बेनी, ३. कृष्ण कवि, ४. रसनिधि, ५. नृपशम्भु, ६. नेवाज, ७. हठी जी, ८. रामसहायदास, ९. पजनेस, १०. द्विजदेव। इन कवियों के अतिरिक्त इस परम्परा में सेनापति, वृन्द तथा विक्रम को और सम्मिलित करना आवश्यक है, क्योंकि ये कवि भी उसी परम्परा के हैं।

सेनापति : कविवर सेनापति की जीवनी के सम्बन्ध में अधिक सामग्री नहीं मिलती। जो कुछ भी सूचना ज्ञात है, वह इनकी रचना के आधार पर ही है। सेनापति ने अपने ग्रन्थ 'कवित्त रत्नाकर' में अपना परिचय दिया है, जो इस प्रकार है :

दीक्षित परसराम दादौ है विदित नाम,
जिन कीने जज्ञ जा की जग मैं बड़ाई है।
गंगाधर पिता गंगाधर के समान जाकौ,
गंगातीर बसति अनूप जिन पाई है।
महा जानिमनि विद्यादान हू को चिन्तामनि,
हीरामनि दीक्षित तैं पाई पंडिताई है।
सेनापति सोई सीतापति के प्रसाद जाकी,
सब कवि कान दै सुनत कविताई हैं।।

इस छन्द से स्पष्ट होता है कि इनके पितामह का नाम परशुराम दीक्षित था तथा इनके पिता गंगाधर दीक्षित गंगा के किनारे अनूप बस्ती में रहते थे। 'अनूप' का अर्थ गंगा के किनारे स्थित प्रसिद्ध नगर अनूपशहर भी हो सकता है, जो उत्तरप्रदेश के बुलन्दशहर जिले में स्थित है। यद्यपि निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता, पर जब तक अन्य प्रमाण न मिलें, तब तक उन्हें अनूपशहर का निवासी मानने में कोई हानि नहीं है। कुछ लेखक सेनापति को संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् भट्ट नागेश दीक्षित से अभिन्न सिद्ध करते हैं। उनका भी यही कथन है कि भट्ट नागेश दीक्षित उसी समय के थे, और वे भी गंगा के तट पर ही निवास करते थे। यह सत्य है कि सेनापति भी अपनी रचनाओं के आधार पर संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् सिद्ध होते हैं, परन्तु वे भट्ट नागेश दीक्षित ही हैं—यह कहना कठिन है; क्योंकि नागेश भट्ट के पिता का नाम शिव भट्ट था और वे शृंगवेरपुर के महाराज रामदत्त के आश्रय में रहते थे। वे प्रसिद्ध वैयाकरण थे और अधिकतर काशी में ही रहे। वे महाराष्ट्री ब्राह्मण थे और उन्होंने अनेक ग्रन्थों की टीका की। नागेश भट्ट के गुरु हरि दीक्षित थे, परन्तु नागेश भट्ट की किसी हिन्दी-रचना का पता नहीं लगता; न नागेश भट्ट के 'सेनापति' उपनाम के सम्बन्ध में ही कोई सूचना प्राप्त होती है। परन्तु दोनों में कुछ साम्य ऐसा है, जो इस अनुमान को पुष्ट करता है कि दोनों एक हो सकते हैं। सेनापति के पिता का नाम गंगाधर था, जो शिव का ही दूसरा नाम हो सकता है; और शिव भट्ट नागेश जी के पिता थे। इसी प्रकार सेनापति के गुरु हीरामनि दीक्षित थे जबकि नागेश भट्ट के गुरु हरि दीक्षित थे। हरि और हीरा में ध्वन्यात्मक साम्य है। इसके अतिरिक्त सेनापति की प्रसिद्धि सीतापति के प्रसाद से हुई। नागेश जी भी महाराज राम के आश्रित थे तथा दोनों ही गंगा के किनारे रहनेवाले थे। अनुमान के लिए थोड़ा आधार यद्यपि इन बातों से मिल जाता है, परन्तु निश्चित रूप से प्रमाण के साथ यह कहना कठिन है कि सेनापति और नागेश भट्ट एक ही हैं।

सेनापति के सम्बन्ध में और कोई सूचना प्राप्त नहीं होती। अभी तक इनकी एक ही कृति 'कवित्त रत्नाकर' प्राप्त हुई है। कुछ इतिहासकारों ने इनकी दूसरी कृति 'काव्यकल्पद्रुम' भी मानी है, पर वह उपलब्ध नहीं है। कुछ लोग 'काव्य-कल्पद्रुम' और 'कवित्त-रत्नाकर' को एक ही ग्रन्थ मानते हैं। 'कवित्त रत्नाकर' में पांच तरंगें और तीन सौ चौरानवे छन्द हैं। इसके अन्तर्गत सेनापति ने श्लेष अलंकार, शृंगार, षड्ऋतु, रामायण और रामरसायन का वर्णन किया है। प्रथम तीन तरंगों से स्पष्ट होता है कि इनका प्रणयन रीति-परम्परा का ध्यान रखकर किया गया है। छन्दों की मूल चेतना रीतिकालीन है, इसलिए इन्हें रीतिबद्ध कवि मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। सेनापति का प्रिय अलंकार श्लेष है, इसीलिए इन्होंने पूरी-की-पूरी तरंग श्लेष अलंकार का चमत्कार दिखाने के लिए

रची है। इनके ये श्लेष बड़े ही रोचक हैं—श्लेष की योजना में इनकी समता करनेवाला केशव को छोड़कर अन्य कोई कवि नहीं है। सभंग-पद-श्लेष और अभंग-पद-श्लेष दोनों का चमत्कार इसमें मिलता हैं। 'कवित्त रत्नाकर' की दूसरी तरंग में शृंगार-वर्णन है जिसके अन्तर्गत नखशिख-सौन्दर्य, उद्दीपन भाव, वय:सन्धि आदि का मनोहारी चित्रण हुआ है। शृंगार के कहीं-कहीं बड़े सुन्दर चित्र इसमें हैं पर मूल प्रयत्न शब्द-चमत्कार-प्रदर्शन का है; भाव और गुण का विश्लेषण उतना नहीं है। एक छन्द द्रष्टव्य है :

नूपुर को झनकाइ मेदनी धरति पाइ,
ठाढ़ी आइ आंगन भई ही सांझी बार सी।
करता अनूप कीन्हीं रानी मैं न भूप की सी,
राजे रासि रूप की बिलास कों अधार सी।
'सेनापति' जाके दृगदूत ह्वै मिलत दौरि,
कहत अधीनता को होत है सिपारसी।
गेह को सिंगार सी सुरत सुख सार सी,
सो प्यारी मानो आरसी चुभी है चित आर सी।।

सेनापति की अप्रतिम सफ़लता उनके उत्कृष्ट ऋतु-वर्णन में है जिसमें यद्यपि शब्द और अर्थ का चमत्कार भरा पड़ा है, परन्तु वर्णित ऋतु का सहज और यथार्थ स्वरूप उनके छन्दों में बड़ा खरा उतरता है। प्रत्येक ऋतु में उठनेवाले लोक-मानस के सहज भाव भी ऋतु-वर्णन के छन्दों में तरंगित हो उठते हैं। इनके ऋतु-वर्णन के छन्द भी सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। यद्यपि सभी ऋतुओं का सुन्दर वर्णन इन्होंने किया है, पर ग्रीष्म और वर्षा का वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली है। केवल एक ही छन्द इसके लिए पर्याप्त होगा :

दूरि जदुराई, सेनापति सुखदाई देखौ,
आई रितु पाउस, न पाईं प्रेम पतियां।
धीर जलधर की, सुनत धुनि धरकी, हैं
दरकी सुहागिन की छोह भरी छतियां।
आई सुधि बर की, हिये में आनि खरकी, तू
मेरी प्रानप्यारी यह पीतम की बतियां।
बीती औधि आवन की, लाल मन भावन की,
द्रग भई बावन की, सावन की रतियां।

चौथी और पांचवीं तरंगों में राम का चरित्र और रामभक्ति-भावना का संक्षिप्त सुन्दर वर्णन है। इन तरंगों में शृंगार, वीर, शान्त और भक्ति-भाव प्रधान हैं। पांचवीं तरंग में भी आलंकारिक चमत्कार भरा पड़ा है जिसमें यमक, श्लेष, अनुप्रास, चित्र, प्रश्नोत्तर आदि के चमत्कार की विशेषता है।